UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 2 Year - 15 February, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

अनुक्रमणिका

❧	प्रेमचंद और दलित–विमर्श **डॉ० एस0बी0एन0 तिवारी**	1-4
❧	Micro Finance as a Financing Tools for Micro Enterprises **Tapas Ranjan Roy**	5-10
❧	भाषा का जैविक व सामाजिक आधार **डॉ0 तस्मीना हुसैन**	11-14
❧	मूल्यों का नवप्रवर्तन : भारत में नैतिक प्रगति में समाचार मीडिया प्रकटीकरण और संचार की भूमिका की खोज **नेहा अनमोल जावळे**	15-17
❧	धनबाद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन (सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में) **विजय कुमार राम**	18-20
❧	सृजन के फूल **डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	21-25
❧	भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के संवैधानिक एवं सरकारी योजनाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्यामकली**	26-32
❧	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, मोहम्मद आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	33-36
❧	कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन **महेश चंद जाटव, नितेन्द्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	37-38
❧	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 शशि मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	39-41
❧	विद्यालयों में शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	42-44
❧	राजस्थान के फड़ चित्रों की लोकप्रियता **स्मिता जायसवाल एवं डॉ0 जया जैन**	45-48
❧	मानवेंद्र नाथ राय की नव मानववाद एवं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता **विकाश कुमार निराला**	49-52
❧	बुद्ध युग में शिक्षक शिक्षा एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता **डॉ0 राजन कुमार त्रिपाठी**	53-55
❧	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन **श्रीमती मुकेशी बाई मीना, श्रीमती पिंकेश मुद्गल एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	56-58

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 2, February 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन

श्रीमती मुकेशी बाई मीना
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली
श्रीमती पिंकेश मुद्गल
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली

सारांश

महात्मा गांधी ने शिक्षा को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा था जो सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त हिंसा व असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगा सके। गांधी जी ने सुझाया था कि बच्चों को रूपांतरित होते सामाजिक परिदृश्य का एक अंग बनाने के लिए आसपास के पर्यावरण जिसमें मातृभाषा एवं अनेक कार्य भी आते हैं। शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में यादृच्छिक न्याय दर्शन विधि के द्वारा कलस्टर के रूप में 60 अध्यापक 120 विद्यार्थी 60 अभिभावकों को लिया गया। कलस्टर को पूर्ण प्रतिनिधित्वकारी बनाने के लिए शहरी अध्यापक, अभिभावक और छात्रों को रखा गया शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया। सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिरुचि में वृद्धि होती है। सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से शैक्षिक गतिविधियों में वृद्धि होती है।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

महात्मा गांधी ने शिक्षा को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा था जो सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त हिंसा व असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगा सके। गांधी जी ने सुझाया था कि बच्चों को रूपांतरित होते सामाजिक परिदृश्य का एक अंग बनाने के लिए आसपास के पर्यावरण जिसमें मातृभाषा एवं अनेक कार्य भी आते हैं। शिक्षा को एक साधन के रुप में उपयोग किया जाये। प्रस्तुत शोधपत्र में हम माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन करेंगे।

पाठ्यचर्या को नया रूप देने के लिए सबसे जरुरी कदम है मूल्यांकन में सुधार जिससे बच्चों और उनके माता–पिता पर बढ़ते दवाब की समस्या का कोई हल निकल सके इसके लिए जरूरी है कि प्रश्नपत्र के स्वरूप में परिवर्तन हो जिससे तर्क शक्ति और रचनात्मक क्षमताओं के आंकलन को बनाया जाये। इसके साथ ही आंतरिक मूल्यांकन में पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का केंद्र बिंदु ही सीखना है मानव जीवन में सीखने का क्षेत्र वहुत ही विस्तृत है बालक जन्म से सीखना प्रारंभ कर देता है तथा मत्यु पर्यंत उसकी सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। सर्वप्रथम बालक अपने चारों तरफ जो वातावरण है उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया करता है तथा अपने अपने व्यवहार को व्यवस्थित करता है शिशु की परिपक्वता में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं तथा उनका अपना पृथक–पृथक अनुभव होता है अतः इस प्रकार बालक के विकास में अधिगम एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि सतत् और व्यापक मूल्यांकन जिसमें मूल्यांकन की शैक्षिक और गैर शैक्षिक दोनों पहलू शामिल हो सके जो शिक्षा की संपूर्ण अवधि के लिए 8.24 थर्ड को अपनाया जाना चाहिए।

शोध समस्या का औचित्य

शिक्षा के तीन प्रमुख अवयव हैं शिक्षक शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम शिक्षाविदों के द्वारा समय–समय पर पाठ्यक्रम से संबंधित विचार प्रस्तुत किए जाते रहे हैं जिससे कि शिक्षा आज की और भविष्य की जरूरत के लिए ज्यादा प्रासंगिक बन सके और शिक्षार्थियों को उसे दबाव से मुक्त किया जाया जा सके जो बालक आज झेल रहे हैं। नए सीसीई पैटर्न का पाठ्यक्रम इसी पर आधारित है कि ज्ञान अर्जित करते समय बच्चों को ज्ञान का समग्र आनंद मिल सके और किसी भी विषय वस्तु को समझने से मिलने वाली खुशी प्राप्त हो सके। प्रस्तुत शोधपत्र में इसी विषय पर प्रकाश डाला गया है कि नए सीसीई पैटर्न के पाठ्यक्रम से विद्यार्थी अभिभावक व अध्यापक कहां तक संतुष्ट हैं तथा सीसीई के पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ा है

सीसीई पैटर्न के पाठ्यक्रम के लागू होने पर अध्यापकों में अभिभावकों की अभिवृत्ति कैसी हो विद्यार्थियों को यह पाठ्यक्रम रुचिकर लगता है या नहीं यह सब इस शोधपत्र के द्वारा जाने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रकरण

"माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसी पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन।"

शोध समस्या के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 में 10 में पढ़ाई जाने वाले सीसी पैटर्न के पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों में आए मानसिक परिवर्तनों को जानना।
- माध्यमिक स्तर पर सीसीई पैटर्न के अनुसार कक्षा 9 में 10 में पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में आए परिवर्तनों का पता लगाना।
- माध्यमिक स्तर पर सीसी पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से शिक्षण पद्धति में आए परिवर्तनों को जानना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के परीक्षा तनाव स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में सार्थक परिवर्तन आता है।
- सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से मूल्यांकन पद्धति की गुणवत्ता उच्च होती है।

शोध अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया जनसंख्या में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में 60 अध्यापक 120 विद्यार्थी और 60 अभिभावकों को लिया गया। न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्वकारी बनाने के लिए शहरी अध्यापक अभिभावक छात्रों को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन के लिए स्वनिर्मित परीक्षण का उपयोग किया गया आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्गमूल परीक्षण का उपयोग किया गया।

शोध अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

सारणी–1 : परिकल्पना 1 के लिए अभिमतों का बिन्दुवार प्रत्याशित आवृत्तियां व प्रेक्षित एवं काई वर्ग मूल्य सारिणी

अभियोग्यता	अध्यापकों का अभिमत			X^2
	सहमत	तटस्थ	असहमत	
प्रत्याशित आवृत्तियां (Fe)	20	20	20	12.6
प्रेक्षित आवृत्ति (Fo)	24	10	6	
प्रेक्षित आवृत्तियों का प्रतिशत	40.00	16.66	10.00	

Df= 4

0.05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 9.488

0.01 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 13.277

व्याख्या – उपरोक्त सारणी संख्या 01 का अध्ययन करने पर विदित होता है कि अध्यापकों के लिए उपयोग की गई प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 7 से 14 पर 60 में से 24 सहमत जो की 6 ऐसे मध्य में 10 सदस्य आते है। हम इस प्रकार कह सकते हैं की सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से मूल्यांकन पद्धति की गुणवत्ता उच्च होती है अतः यह परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर और 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

सारणी 2 : परिकल्पना 2 के लिए अभिमतों का बिन्दुवार प्रत्याशित आवृत्तियां व प्रेक्षित एवं काई वर्ग मूल्य सारिणी

अभियोग्यता	अध्यापकों का अभिमत			X^2
	सहमत	तटस्थ	असहमत	
प्रत्याशित आवृत्तियां (Fe)	40	40	40	11.6
प्रेक्षित आवृत्ति (Fo)	78	14	25	
प्रेक्षित आवृत्तियों का प्रतिशत	66.00	11.60	13.20	

Df= 4

0.05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 9.488

0.01 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 13.277

व्याख्या – सारणी संख्या 02 का अवलोकन करने से प्रतीत होता है कि विद्यार्थियों की प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 8 से 11 पर 120 में से 78 सेहत जबकि 28 ऐसे मध्य 14 तटस्थ है। अतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से छात्रों की परीक्षा तनाव स्तर पर प्रभाव नहीं पड़ता है इस बात की पुष्टि काई वर्गमूल्य परीक्षण से होती है।

परिकल्पना 3 के लिए अभिमतों का बिन्दुवार प्रत्याशित आवृत्तियां व प्रेक्षित एवं काई वर्ग मूल्य सारिणी

सारणी 03

अभियोग्यता	अध्यापकों का अभिमत			X^2
	सहमत	तटस्थ	असहमत	
प्रत्याशित आवृत्तियां (Fe)	40	40	40	4.7
प्रेक्षित आवृत्ति (Fo)	82	18	20	
प्रेक्षित आवृत्तियों का प्रतिशत	68.33	15.00	16.66	

Df= 4

0.05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 9.488

0.01 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का मान 13.277

व्याख्या – उपरोक्त सारणी का अध्ययन करने से विदित होता है कि विद्यार्थियों की प्रश्न संख्या 15 से 20 पर 120 में से 82 सहमत 20 ऐसे मध्य 18 तथा निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में सार्थकता में परिवर्तन आता है। अतः यह परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। अर्थात सीखने का स्तर सुधरता है।

निष्कर्ष

सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिरुचि में वृद्धि होती है इसकी पुष्टि काई वर्ग मूल्य परीक्षण से होती है। प्रेक्षित आवृत्तियों एवं प्रत्याशित आवृतियों के बीच अंतर 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर पाया गया है। सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम से मूल्यांकन पद्धति की गुणवत्ता उच्च होती है। प्रेक्षित आवृतियां एवं प्रत्याशित आवृतियों के बीच अंतर 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है।

सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से शैक्षिक गतिविधियों में वृद्धि होती है इसकी पुष्टि काई वर्ग से होती है। प्रेक्षित आवृतियों एवं प्रत्याशित आवृत्तियों के बीच अंतर 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डी.एम. रोबोट, ट्रैवल्स एम इंट्रोडक्शन टू एजुकेशनल रिसर्च जनरल
2. ए.आर. शर्मा, डा0 शिक्षा में अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
3. नगर, एन.के. सांख्यिकी के मूल तत्व, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ.
4. ए.आर. शर्मा, डा0, शिक्षण अधिगम में नवीन परिवर्तन, लॉयल बुक डिपो, मेरठ